भलाई का कारोबार

स्मिता जैन

समाज की बेहतरी के लिए काम करने वाले उद्यमियों की संख्या बढ़ रही है और ये करोड़ों लोगों की गरीबी दूर करने के लिए छोटे कारोबारों में निवेश कर रहे हैं। बिना लाभ के आधार पर काम करने वाला वैश्विक वेंचर फ़ंड एक्यूमेन इन कारोबारों के विस्तार में मदद दे रहा है।

पिछले कुछ दशकों में भारत में बहुत तेज़ी से जीवन स्तर बदला है लेकिन आय में बड़ी असमानता अब भी बनी हुई है। इस समस्या को हल करने में जुटे परोपकारी विचारों वाले लोगों का एक बढ़ता वर्ग मानता है कि कारोबारी नज़रिये से समाज में नई प्रवृत्तियों के विकास से लाखों लोगों को गरीबी के गर्त से बाहर निकालने के उपाय मिल सकते हैं।

अमेरिका में शुरू किए गए वैश्विक वेंचर फ़ंड एक्यूमेन फंड का भारत में प्रबंधन देख रहे प्रबंधक वरुण साहनी कहते हैं, ''हमारा दृढ़ विश्वास है कि गरीबी हटाने में कारोबार की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। निम्न-आय समुदायों में लोगों पर भारी कर्ज स्वास्थ्य देखभाल जैसी आवश्यक सेवाओं और चीज़ों तक पहुंच न होने के कारण होता है। एक्यूमेन फंड रणनीतिक निवेश उपलब्ध करवाकर सामाजिक उद्यमियों की भारत में अपने व्यवसाय बढ़ाने में सहायता करता है। साहनी बताते हैं, ''हम उन व्यवसायों की सहायता करते हैं जो इस वर्ग के बाज़ार में खपने लायक उच्च कोटि की सेवाएं और वस्तुएं विकसित कर रहे हैं।''

एक्यूमेन फंड व्यवसाय और परोपकारिता का अनूठा मिश्रण है। इस फ़ंड की वेबसाइट (www.acumenfund.org) पर संस्था का लक्ष्य स्पष्ट शब्दों में व्यक्त है, ''हम यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं कि परोपकार के काम में लगी थोड़ी पूंजी और बेहतरीन व्यवसाय कौशल के सही मेल के बूते लाखों गरीबों की मदद करने वाले उद्यम तैयार किए जा सकते हैं। हम वहां निवेश पर ध्यान केंद्रित करते हैं जहां नए सोच के आधार पर बाज़ार को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य, पानी और आवास जैसी अतिमहत्वपूर्ण चीज़ों और सेवाओं तक लोगों की पहुंच हो सके।''

वॉल स्ट्रीट के एक पूर्व इन्वेस्टमेंट बैंकर जैक्लीन नोवोग्रात्ज़ अपने कौशल का उपयोग संसार की समस्याओं को नए ढंग से हल करने के लिए करना चाहती थीं। वर्ष 2001 में उन्होंने एक्यूमेन फंड की स्थापना की जो लोगों द्वारा दान दी गई राशि का उपयोग विकासशील देशों में छोटे व्यवसायों में निवेश के लिए करता है।

अब तक एक्यूमेन फंड ने भारत, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, तंजानिया और केन्या में ऐसे व्यवसायों में थोड़ा पूंजी निवेश किया है जो लोगों को आवास, पानी और स्वास्थ्य सुविधाएं इस तरह से उपलब्ध करवा सकें कि उन तक लोगों की पहुंच हो। निवेश की शर्त यह होती है कि व्यवसाय में निवेश की गई धनराशि वापस लौटाई जाएगी और उनकी सेवाओं से पांच वर्षों में कम से कम दस लाख लोग लाभान्वित होंगे। वरुण साहनी स्पष्ट करते हैं, ''हमारी पूंजी परोपकार के उद्देश्य से दी जाती है, इसलिए हम बड़े जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं। हम निवेश करने वाली कम्पनियों के व्यवसायों को मज़बूती से जमाने में उनकी सहायता करते हैं। उनसे हमारी अपेक्षा बस यही होती है कि वे हमारी पूंजी लौटा दें, उनके व्यवसाय का एक सामाजिक प्रभाव पड़े, नए रुझान दिखें और उनके द्वारा तैयार सेवाओं और उत्पादों के लिए बाज़ार विकसित हो।''

एक्यूमेन फंड ने भारत में पांच सामाजिक उपक्रमों में निवेश किए हैं- दृष्टि, आइडीई इंडिया, मेडिसिन शॉप इंडिया, वाटर हेल्थ इंटरनेशनल और स्कोजो। इसी साल हैदराबाद,

स्कोजो में नेत्रों की देखभाल से जुड़ी एक उद्यमी। एक्यूमेन फ़ंड के निवेश की मदद से वह कम कीमत के चश्मे बेचती है।

आंध्रप्रदेश से काम शुरू करने वाला एक्यूमेन फंड कार्यालय इन निवेशों का प्रबन्धन करता है।

आइडीई इंडिया कम लागत वाली बूंद-बूंद सिंचाई प्रणालियों को लोगों तक पहुंचाता है जिससे किसी किसान की आय दो-तीन गुनी तक बढ़ सकती हैं। मेडिसिन शॉप इंडिया कम आय वर्ग के शहरी ग्राहकों के लिए चलाई जा रही फार्मेसी/क्लीनिक श्रृंखला है।

वाटर हेल्थ इंटरनेशनल सामुदायिक जल प्रणालियां मुहैया कराने के लिए काम करती है और अब तक भारत के 100,000 से अधिक ग्रामीणों को सुरक्षित पानी वाजिब मूल्य पर उपलब्ध करवा चुकी है। एक्यूमेन फंड का उद्यम

फोटो: साभार, एक्यूमेन फंड (न्यू यॉर्क)

ऊपर बाएं: विजयवाडा, आंध्र प्रदेश के निकट पानी सप्लाई के लिए डिलिवरी सेवा। गरीब ग्राहकों को साफ और सुरक्षित पानी उपलब्ध कराने के लिए वाटरहेल्थ इंटरनेशनल के निवेश से यह सेवा शुरू की गई है।

ऊपर: निम्न आय वर्ग के लोगों के लिए मुंबई के निकट खोली गई दवाइयों की दुकान मेडिसिन शॉप के उद्घाटन के अवसर पर कर्मचारी।

स्कोजो आंखों की जांच करके कम लागत के चश्मे मुहैया कराता है ताकि दर्ज़ी और शिल्पकार जैसे गरीब कामगार अपनी आजीविका लगातार कमाते रह सकें।

साहनी कहते हैं, ''हमारे लिए भारत में अवसरों की भरमार है। यहां अर्थव्यवस्था तेज़ी से मजबूत हो रही है- लाखों-करोड़ों मध्यवर्गीय, ग्रामीण और शहरी गरीब नागरिकों की आंकाक्षाएं और उन्हें पूरा करने के अवसर बढ़ रहे हैं। हम देख रहे हैं कि निम्न आय वर्गीय समुदायों की मांगों को पूरा करने वाले व्यवसायों में रुचि लेने वाले उद्यमियों की संख्या बढ़ रही है। हम जैसे संगठनों के सामने चुनौती यह है कि हम इन उद्यमियों की पहचान करें और इनके व्यवसायों को मज़बूत बनाएं।''

नोएडा, उत्तर प्रदेश स्थित उद्यम दृष्टि का लक्ष्य है ग्रामीण भारत में बड़ा बदलाव। उसके सह-संस्थापक नितिन गच्छायत बताते हैं, ''हमारा लक्ष्य सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित ग्रामीण उद्यमियों के नेटवर्क के माध्यम से उद्यमियों को गांवों में आवश्यक सेवाएं और वस्तुएं उपलब्ध करवाने में मदद करना है। दृष्टि ने फ्रेंचाइज़ के आधार पर खोखों का एक ऐसा नेटवर्क तैयार किया है जो उसके द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही विभिन्न सेवाओं जैसे चश्मे, किताबें, रोशनी का साजोसामान, सेलफोन, स्वास्थ्य देखभाल, माइक्रोफाइनेंस, ई-शासन, शिक्षा और बीमा के बारे में सूचना उपलब्ध करवाते हैं। आज 12 राज्यों में दृष्टि के 1600 उद्यमी करीब 15 लाख ग्राहकों को सेवाएं उपलब्ध करवा रहे हैं।

भारत में लाभ के साथ-साथ सामाजिक विकास का दोहरा लाभ कमाने की इच्छुक कम्पनियों को परम्परागत ऋणदाता संस्थाएं उपेक्षा की दृष्टि से देखती हैं, इसलिए दृष्टि को निवेशकर्ता ढूंढने में दिक्कत हो रही थी। गच्छायत बताते हैं, ''हमने 2002 में एक गैर लाभकारी कम्पनी शुरू की। हमने आखिर एक्यूमेन फंड से सहायता मांगी क्योंकि हम दोनों के लक्ष्य एक ही थे और वे हमारी आकांक्षाओं को समझते थे।'' वह ध्यान दिलाते हैं कि एक्यूमेन फंड ने केवल पूंजी निवेश ही नहीं किया, उससे प्राप्त प्रबन्धन सहायता और व्यापक नेटवर्क भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। ''एक्यूमेन फंड की अन्य समान विचार वाले संगठनों से भागीदारी का भी हमें बहुत लाभ मिला। उदाहरण के लिए, आज हम अपनी फ्रेंचाइजी के माध्यम से स्कोजो द्वारा विकसित चश्मे वितरित कर रहे हैं।''

कैलिफ़ोर्निया में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के पूर्व डिजिटल विज़न फ़ेलो रहे और अब एक्यूमेन फंड के फ़ेलो डेविड लेर दृष्टि के साथ काम कर रहे हैं। फंड के सात फ़ेलो हैं जिनमें से तीन भारत में काम कर रहे हैं। ये सभी कॉरपोरेट व्यवसाय के अनुभव से सम्पन्न लोग हैं जो नौ महीनों के लिए अपनी विशेषज्ञता किसी संस्था को देते हैं। मूल रूप से न्यू यॉर्क के वासी लेर दृष्टि की निर्णय प्रक्रिया को दुरुस्त कर रहे हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में दृष्टि के पहले स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम को शुरू करने के सिलसिले में वह हाल ही में बिहार में पांच हफ़्ते रहे। अपने अनुभव के बारे में लेर कहते हैं, ''दृष्टि के साथ काम करते हुए भारत के बारे में समझदारी बिल्कुल बदल गई है, विशेषत: यहां के ग्रामीणों की चुनौतियों के बारे में।'' वह कहते हैं, ''हालांकि मैंने बहुत यात्राएं की हैं और वैसे गांवों में भी गया हूं जैसे गांवों में दृष्टि काम कर रही है, लेकिन मैंने वहां रहने वाले लोगों और उनके जीवन के बारे में गहराई से नहीं जाना था। यह ज्ञान और और सीखी गई चीज़ों को काम में अमल में लाना मेरे लिए सबसे बड़ी बात है।''

संस्थाओं के साथ काम करने वाले फ़ेलो को अपने अनुभव वीडियो, इंटरनेट पत्रिका या फोटो के जरिये संग्रहीत करने को प्रोत्साहित किया जाता है। यह विकास के क्रम में बड़े बदलाव के लिए सृजनात्मकता की ताकत में एक्यूमेन के विश्वास के अनुरूप है।

साहनी कहते हैं, ''एक्यूमेन एक बेहद सृजनात्मक संगठन है। हमारा काम क्योंकि एकदम नए ढंग का है, इसलिए क्या कारगर होता है और क्या कारगर नहीं होता, इसे लेकर हमें रोज नए अनुभव हो रहे हैं। इन्हें दूसरों तक पहुंचाने के लिए हमारी विचार प्रक्रिया रचनात्मक होनी ही चाहिए।''

__स्मिता जैन__ स्वतंत्र अमेरिकी पत्रकार हैं और बोस्टन, मैसाच्युसेट्स में रहती हैं।